बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल।
हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए नूरजमाल।।५८ ।।

दूसरी बात जरा सी कहीं भी कुछ नहीं है। यह बात मेरी रूह को श्री राजजी महाराज नूरजमाल ने निश्चित करा दी है।

चुआं थी रुह मूंहजी, से पण आइम भूल।
मूंजी आंऊं त चुआं, जे हुआं विच अर्स असल।।५९ ।।

मेरी रूह कहती है ऐसा कहना भी भूल है। मैं तो तभी कह सकती हूं जब मैं अखण्ड परमधाम में हूंगी।

हित न्हाए विच बेही करे, आंऊं की चुआं मूके पांण।
केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए जांण।।६० ।।

ऐसे झूठे संसार में बैठकर मैं अपने आपको कैसे कहूं? यहां सब कुछ करना कराना आपके हाथ है। यह सब आपको पता है।

हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिए थो सभ तूं।
तो रे तोहिजी गालिनजी, दम न निकरे मूं।।६१ ।।

यह भी बातें प्यार की हैं जो आप कर रहे हैं। आपके बिना आपकी बातों का मैं दम नहीं भर सकती।

आसां उमेदूं जे हुज्जतूं, सभ तूंहीं उपाइए।
मूंजे मोंहें तेतरी निकरे, जेतरी तूं चाइए।।६२ ।।

हमारे अन्दर हमारी सभी चाहना आप ही उत्पन्न कराते हैं। मेरे मुंह से उतनी ही बात निकलती है, जितनी आप कहलवाते हो।

चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जाणे।
तो रे आइयां हेकली, सभ जाणे थो पांणे।।६३ ।।

कह-कहकर मैं कितना कहूं? दिल की बात सब आप जानते हैं। आपके बिना मैं अकेली हूं। यह बात भी आप जानते हैं।

महामत चोए मेहेबूबजी, हे डिंनी तो लगाए।
तूं जागे अर्स्सीं निद्रमें, जाणे तींय जगाए।।६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! यह माया तो आपने लगा दी। आप जाग रहे हैं। मैं नींद में सोई हूं, इसलिए जैसे जगा सकते हो, वैसे जगाओ।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

रूहन जो फैल हाल

धणी मूंहजी रूहजा, गाल करियां कोड करे।
आंईंन उमेदूं लाडज्यूं, अची करियां गरे।।१ ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं आपके साथ प्यार से खुश होकर बातें करती हूं कि मेरे अन्दर प्यार की बड़ी चाहना है जो घर में आकर पूरी करूंगी।

Nijanand App

रूहें बिहारे रांद में, पाण बेठा परडेह।
सुध न्हाए के रूह के, रांद न अचे छेह।। २ ।।

रूहों को खेल में बिठा रखा है और आप परदेश में बैठे हो। हम रूहों को जरा भी होश नहीं है, क्योंकि खेल का किनारा ही नहीं मिलता।

अस्सां मथें आइयो, पिरियन जो फुरमान।
मूक्यो आं रसूल के, डियन रूहन जाण।। ३ ।।

हमारे ऊपर आपने कुरान भेजा और रसूल को भेजा कि रूहों को जाकर बता दो।

लिख्यो आं फुरमान में, रमूजें इसारत।
भत्ती भत्ती ज्यूं गालियूं, सभ अर्सजी हकीकत।। ४ ।।

आपने कुरान में रमूजें (रम्जें) और इशारतें लिखी हैं। तरह-तरह की बातों में परमधाम की सब हकीकत लिखी है।

तो चेयो रसूल के, तूं थीयज हुनमें अमीन।
डिज तूं मूर निसानियूं, जीं अचे रूहें आकीन।। ५ ।।

आपने रसूल से कहा कि आप खेल में जाकर रूहों में सिरदारी करना और परमधाम के सब निशान बताना, ताकि रूहों को यकीन आ जाए।

रूहें लग्यूं जडे रांद में, विसर वेओ घर।
आसमान जिमी जे विच में, अर्स बका न के खबर।। ६ ।।

रूहें जब खेल में मग्न हो गई हैं, तो उन्हें अपना घर भूल गया है। आसमान और जमीन के बीच किसी को भी अखण्ड घर की सुध नहीं है।

तडे मूकियां रूह पांहिजी, जा असांजी सिरदार।
कुंजी मूकियां अर्स जी, उपटन बका द्वार।। ७ ।।

तब आपने बड़ी रूह श्री श्यामाजी जो हमारे सिरदार हैं, को भेजा और परमधाम के दरवाजे खोलने के लिए तारतम ज्ञान की कुंजी भेजी।

रूहें पसी मूं द्रियूं, रई न सगे रे रांद।
कां न विचारे पांण के, मूं सिर केहो कांध।। ८ ।।

रूहों को देखकर मैं डर गई कि यह खेल के बिना नहीं रह सकतीं। यह कोई भी विचार नहीं करतीं कि मेरे धनी श्री राजजी महाराज हैं।

वडी-रूह रूहन के, चई समझाईन।
पाण न्हायूं हिन रांदज्यूं, घर बकामें आईन।। ९ ।।

बड़ी रूह श्री श्यामाजी ने भी रूहों को कई तरह से समझाया कि हम खेल के नहीं हैं। अपना घर परमधाम है।

Nijanand App

कई केयांऊं रांदज्यूं गालियूं, समझन के सौ भत।
कांधे मूकी मूंके कोठण, जांणी आंजी निसबत।। १० ।।

उन्होंने कई तरह की खेल की बातें बताईं और सौ तरह से समझाया। श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर मुझे तुम्हें बुलाने को भेजा है।

वडी रूह चोए आं कारण, मूं हेडो केयो पंध।
लखे भतें समझाइयूं, पण हियो न अचे हंद।। ११ ।।

बड़ी रूह श्री श्यामाजी ने कहा कि मैंने तुम्हारे वास्ते इतना लम्बा रास्ता पार किया है। उन्होंने लाखों तरह से समझाया, परन्तु घर का ठिकाना हृदय में आता ही नहीं है।

आंऊं आइस आंके कोठण, उपटे बका दर।
आसमान जिमी जे विच में, जा के के न्हाए खबर।। १२ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं कि मैं तुम्हें बुलाने के वास्ते आई हूं। परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं, जिनकी जानकारी दुनियां के आसमान और जमीन के बीच किसी को नहीं है।

वडी वडाई आंजी, पसो केहेडो पांहिजो घर।
हे कूडा कूडी रांदमें, छडे कायम वर।। १३ ।।

तुम्हारी बड़ी भारी साहिबी है। देखो, अपना घर कैसा सुन्दर है। इस झूठे खेल में हम मग्न हो गए हैं और अपने अखण्ड धनी को छोड़ दिया है।

कई करे रांदज्यूं गालियूं, फिरी फिरी फना डुख।
पांहिजा कायम अर्सजा, कई कोडी डेखारयाई सुख।। १४ ।

उन्होंने कई तरह से खेल की बातें बताईं। संसार के दुःख बताए और अपने घर अखण्ड परमधाम के करोड़ों सुख दिखलाए।

तोहे रूहें न छडीन रांदके, कां निद्रडी लगाई हिन।
कडे थी न हेडी फकडी, मथां हिन रूहन।। १५ ।।

फिर भी रूहें खेल को नहीं छोड़ती हैं। ऐसी माया (नींद) लगा दी है। रूहों के ऊपर ऐसी हंसी पहले कभी नहीं हुई।

आंऊं पुकारियां इंनी कारण, पण इंनी केहो डो।
आऊं पण बंधिस रांदमें, करियां कुजाडो।। १६ ।।

मैं इनके वास्ते ही पुकार करती हूं, परन्तु इनका दोष भी क्या है? मैं भी खेल में आकर बंध गई हूं। अब क्या करूं?

हिक लधिम गाल पिरनजी, चुआं सभे जेडिन।
जा लगाइल हिन हक जी, सा न छुटे पर किन।। १७ ।।

प्रीतम की एक बात मैंने पाई। वही सब सखियों को कहती फिरती हूं कि जो माया श्री राजजी महाराज ने स्वयं लगाई है, वह किसी और से नहीं छूटेगी।

Nijanand App

मूं उमेदूं पिरनज्यूं, लधिम भली पर।
सुयम मोहां सजणे, जो खिलवत थी घर।। १८ ।।

मुझे अपने प्रीतम से बड़ी उम्मीदें हैं, जो अच्छी तरह से पूरी हुईं। वह सब मैंने अपने धनी के मुखारबिन्द से सुनीं, जो मूल-मिलावा में बातें हुई थीं।

परूडिम पिरन जी, हे जा डेखारयाई रांद।
अस्सां मथें खिल्लण, केइए कुडन के कांध।। १९ ।।

मैंने अपने प्रीतम की बात को समझा कि उन्होंने हमें खेल क्यों दिखाया? फिर पहचाना कि हमारे ऊपर हंसी करने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने ऐसा किया है।

इस्क धणी जे दिल जो, पेरो न लधों पांण।
त डेखारयाई रांदमें, इस्कजी पेहेचान।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के चित्त की हकीकत (इश्क) को पहले मैंने नहीं जाना था, इसलिए श्री राजजी महाराज ने इश्क की पहचान खेल दिखाकर कराई।

मूं तेहेकीक आयो दिलमें, अगरो धणी इस्क।
डिठम अर्स खिलवतमें, सा रही न जरो सक।। २१ ।।

अब मेरे दिल में निश्चित हो गया कि धनी का इश्क बड़ा है। मूल-मिलावा में जो देखा था उसमें जरा भी संशय नहीं रहा।

मूं उमेदूं दिलमें, धणी से घारण।
को न होन उमेदूं धणी के, मूंजा लाड पारण।। २२ ।।

मेरे दिल में धनी से कुछ मांगने की चाहना थी, तो फिर हे धनी! आपके दिल में हमारे लाड़ पूरे करने की इच्छा क्यों नहीं पैदा होती?

तरसे दिल मूंहजो, जाणे कडे धणी पस्सां।
त कीं न हून कांध के, मिडन उमेदूं अस्सां।। २३ ।।

मेरा दिल तड़प रहा है कि कब धनी को देखूं, तो हे धनी! आपके दिल के अन्दर हमसे मिलने की चाहना क्यों नहीं होती?

दिल थिए मिडन धणीयसे, जे मूं इस्क न हंड।
कांध पूरे इस्कसे, तिन आए सौ गणी चड।। २४ ।।

हमारे दिल में यहां कुछ भी इश्क नहीं है। पर धनी से मिलने की चाहना होती है। फिर श्री राजजी महाराज तो इश्क से भरपूर हैं। उनकी चाहना तो सौ गुना अधिक होनी चाहिए।

पण हे गाल्यूं आईन रांदज्यूं, ते मूंके सिकाइए।
पांण इस्क डेखारे लाडमें, मूंके कुडाइए।। २५ ।।

परन्तु यह बातें सब खेल की हैं, इसलिए आप मुझे तरसा रहे हो और बड़े लाड़ से आप अपना इश्क दिखाकर मुझे कुढ़ा रहे हो।

Nijanand App

मूं उमेदूं दिल में, धणी ज्यूं गडजण।
लाड पारण असांहिजा, आईन अगरयूं सजंण।। २६ ।।

मेरे दिल में धनी से मिलने की चाहना है। मेरे लाड़-प्यार पूरा करने के लिए आपके दिल में मिलने की चाहना मेरे से अधिक होनी चाहिए।

अंईं सुणेजा जेडियूं, चुआं इस्क जी गाल।
हे सुध न अस्सां अर्स में, धणी केहडी साहेबी कमाल।। २७ ।।

हे सखियों! तुम सुनो मैं तुम्हें इश्क की बात कहती हूं, परमधाम में हमारे धनी की साहेबी कितनी कमाल की हैं यह सुध हमें नहीं थी।

न सुध केहडो कादर, न सुध केहडी कुदरत।
न सुध अर्स कायम जी, न सुध हक निसबत।। २८ ।।

हमें इतनी भी खबर नहीं थी कि आप कितने सामर्थ्य वाले हो और कितनी समर्थ आपकी माया है। न हमें अखण्ड घर की सुध थी और न ही यह पहचान ही थी कि मैं आपकी अंगना हूं।

सुध न सुख कांधजा, सुध न धणी इस्क।
सुध न अस्सां लाडजी, केहडा पारे हक।। २९ ।।

हमें धनी के आनन्द की और इश्क की खबर नहीं थी। हमें यह भी पता नहीं था कि हमारे लाड़-प्यार को श्री राजजी महाराज कैसे पूरा करते हैं?

सुध न आसा उमेद, सुध न प्रेम प्रीत।
सुध न अर्स अरवाहों के, धणी रखियूं केही रीत।। ३० ।।

हमें आशा उम्मीद, प्रेम, प्रीति की सुध नहीं थी। यह भी सुध नहीं थी कि हम परमधाम की रूहों को श्री राजजी महाराज कैसे रखते हैं?

हे जे हितरूं गालियूं, केयूं इस्क जे कारण।
लाड कोड आसा उमेदूं, रूहन ज्यूं पारण।। ३१ ।।

यह जो मैंने इतनी बातें की हैं, इश्क के वास्ते ही की हैं। हम रूहों के लाड़, प्यार, आशा, उम्मीद, खुशी पूरी करने के वास्ते ही यह खेल किया है।

जेहेडो धणी पांहिजो, तेहेडी तेहजी रांद।
लाड कोड इस्क जा, तेहेडाई पारे कांध।। ३२ ।।

जैसे मेरे धनी हैं वैसे ही उनका खेल है। हमारे लाड़, प्यार, खुशी, इश्क को इसी तरह से श्री राजजी पूरा करते हैं।

बडी गाल धणीयजी, लगी मथे आसमान।
आंऊं रे पाणी भूं सूकीयमें, खाधिंम डुब्यूं पांण।। ३३ ।।

श्री राजजी की बात बड़ी है जो आसमान तक गई है। मैं इस बिना पानी के सूखी जमीन में डुबकियां लगा रही हूं।

Nijanand App

जा सहूर करियां रूह से, त निपट गरई गाल।
चुआं हित हिन मूंह से, मूंजो खसम नूरजमाल।। ३४ ।।

यदि अपनी रूह से विचार करके देखती हूं तो यह बात भारी है। खेल में अपने मुंह से कहती हूं कि नूरजमाल श्री राजजी महाराज मेरे स्वामी हैं।

अंई गाल सुणेजा जेडियूं, मूं चरई ज्यूं चंगी भत।
गाल कंदे फटी न मरां, जे कांध से निसबत।। ३५ ।।

हे सखियों! तुम मुझ दिवानी की बात अच्छी तरह सुनो, यह बात करते मैं फटकर मर क्यों नहीं जाती कि मेरा किस धनी से सम्बन्ध है।

लाड कोड आसा उमेदूं, आंऊं चुआं मूं माफक।
पारण वारो मूं धणी, कायम अर्स जो हक।। ३६ ।।

लाड़, प्यार, आशा, उम्मीद मैं अपने अनुसार ही कहती हूं। अखण्ड परमधाम के जो श्री राजजी महाराज हैं, वही इसको पूरा करने वाले हैं।

जे आंईं गाल विचारियो, रूहें मेडो करे।
त रही न सगों किएं रांदमें, हे कूडा वजूद धरे।। ३७ ।।

हे रूहो! यदि सब मिलकर इस बात को विचार करो तो इस संसार में झूठा तन धारण करके हम रह नहीं सकते।

सहूर डियण मूं हियो, कठण केयांऊं निपट।
न तां विचार कंदे हिक हरफजो, फटी पोए न उफट।। ३८ ।।

मैंने यह समझने के लिए ही अपने दिल को कठोर किया है, वरना एक अक्षर का विचार करते ही मैं पटाखे के समान फूट जाती (मर जाती)।

सभ अंग डिंनाऊं कठण, त रह्यो वंजे आकार।
न तां सुणी विचारी हे गालियूं, कीं रहे कांधा धार।। ३९ ।।

आपने हमारे सभी अंगों को कठोर बना दिया है? इसलिए शरीर खड़ा है, वरना इन बातों को सुनकर विचार कर धनी आपके बिना कैसे रहा जा सकता है?

इलम डिंनाऊं पांहिजो, मय निपट वडो विचार।
बका न चौडे तबकें, से डिंनो उपटे द्वार।। ४० ।।

आपने अपना ज्ञान दिया जिसमें बड़ा सार भरा है। अखण्ड परमधाम की खबर चौदह लोकों को नहीं है, जिसके दरवाजे आपके ज्ञान ने खोल दिए हैं।

विहारे ते विचमें, जो बका वतन।
करे निसबत हिन कांध से, असल कायम रूह तन।। ४१ ।।

अखण्ड परमधाम में मूल-मिलावा में जहां हमारी परआतम है, आपने हमें बिठा दिया और अपना सम्बन्ध बता दिया।

Nijanand App

हे इलम एहेडो आइयो, सभ दिल जी पूरण करे।
डेई इस्क मेडे कांध से, घर पुजाए नूर परे।।४२ ।।

यह आपका तारतम ज्ञान ऐसा है, जो दिल की सभी चाहनाएं पूरी करता है। यह इश्क देकर पति से मिलवाता है और अक्षर पार अक्षरातीत धाम में पहुंचाता है।

रूहें पांण न विचारियूं, हिन इलम संदो हक।
से कीं न करे पूरी उमेद, जे में न्हाए सक।।४३ ।।

हे रूहो! हमने इस बात का विचार नहीं किया, कि श्री राजजी महाराज का यह संशय मिटाने वाला ज्ञान है, तो हमारी चाहनाएं क्यों पूरी नहीं करता?

धणी पांहिजो पांण के, विचारण न डे।
के के डींह हिन रांद में, करे थो रखण के।।४४ ।।

अपने धनी हमे विचार ही नहीं करने दे रहे हैं। वह कुछ दिन खेल में रखना चाहते हैं।

मूंके अकल न इस्क, से पट खोल्याई पांण।
उघाड्यूं अंख्यूं रूहज्यूं, थेयम सभे सुजाण।।४५ ।।

मुझे न अक्ल थी, न इश्क था। मेरी रूह की आंखों को श्री राजजी ने ही खोला, जिससे मुझे सारी जानकारी मिली।

न तां केर आंऊं केर इलम, आंऊं हुइस के हाल।
पुजाइए हिन मजलके, मूं धणी नूरजमाल।।४६ ।।

नहीं तो मैं कौन हूं, यह इलम क्या है, मेरी हालत क्या है और मुझे इस सीमा तक श्री राजजी महाराज ने कैसे पहुंचाया, की जानकारी नहीं थी।

आंऊं हुइस कबीले के घर, ही गंदो वजूद धरे।
थेयम धणी नूरजमाल घर, जे दर नूर अचे मुजरे।।४७ ।।

मैं झूठे कुटुम्ब, परिवार में गन्दा शरीर धारण करके बैठी थी। मेरे पति श्री राजजी महाराज हैं, जो अखण्ड घर के मालिक हैं, जिनके दरवाजे पर अक्षरब्रह्म दर्शन करने आते हैं।

बाहेर मंझ अंतर, सभनी हंदे इस्क।
रूहअल्ला डिखारई, वडी दोस्ती हक।।४८ ।।

परमधाम में बाहर-अन्दर सब जगह इश्क भरा है। श्री श्यामाजी महारानी ने हमारी श्री राजजी महाराज से पक्की दोस्ती की खबर भी दी।

मूं फिराक हिन धणी जो, मूंआं अगरो हिन धणी के।
आंऊं बेठिस धणी नजर में, सिधी न गडजां ते।।४९ ।।

मेरी धनी से जुदाई, धनी की जुदाई रूहो से ज्यादा है। मैं उनकी नजर के सामने बैठी हूं, परन्तु उनसे मिल नहीं सकती।

Nijanand App

मूं फिराक धणी न सहे, मूंके बिहारयाई तरे कदम।
धणी पांहिजी रूहन रे, रही न सके हिक दम।।५०।।

मेरा वियोग धनी सहन नहीं कर सकते, इसलिए उन्होंने चरणों के तले बिठा रखा है। मेरे धनी अपनी रूहों के बिना एक पल नहीं रह सकते।

मूं धणी रे घारई, मूंजी सभ उमर।
इस्क धणी या मूंह जो, पस जा पटंतर।।५१।।

मैंने धनी के बिना ही अपनी सारी उम्र बिता दी। अब धनी के इश्क का और मेरे इश्क का अन्तर आप स्वयं समझ लो।

महामत चोए मेहेबूब जी, अस्सां इस्क बेवरो ईं।
मूंजे आंजे दिल जी, आंऊं कंदिस अर्ज बेई।।५२।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! हमारे इश्क का तो यही विवरण है। अब मैं आपके दिल का और अपने दिल का दूसरी तरह से विवरण करती हूं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। २४५ ।।

झगडे जो प्रकरण

वलहा जे आंऊं तोके वलही, गिंनी बिठे तरे कदम।
हे मूं दिल डिंनी साहेदी, तूं मूं रे रहे न दम।।१।।

हे मेरे प्रीतम! मैं आपको प्यारी हूं। आपने मुझे अपने चरणों तले बिठा रखा है। यह मन गवाही देता है कि आप मेरे बिना एक पल भी नहीं रह सकते।

डिंनी बी साहेदी इलम, त्री तोहिजे इस्क।
चौथी साहेदी रसूल, बियूं कई साहेदियूं हक।।२।।

दूसरी गवाही आपके इलम से मिली। तीसरी गवाही आपके इश्क से मिली। चौथी गवाही रसूल साहब से मिली और भी कई गवाहियां मिलीं।

तोहिजे इलमें मूंके ईं चयो, ही रांद केई आं कारण।
लाड कोड आसां उमेदूं, से सभेई पारण।।३।।

आपके इलम ने मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। प्यार हर्ष, आशा, उम्मीद सब तुम्हारी पूरी की जाएंगी।

बेई न जरे जेतरी, तोहिजे दिलमें गाल।
लाड उमेदूं रूह दिलज्यूं, से तूं पूरे नूरजमाल।।४।।

आपके दिल में इसके अतिरिक्त और कोई जरा सी भी बात नहीं है कि रूहों के दिल की चाहना आप श्री राजजी महाराज पूरी करते हैं।

हे चियम तिर जेतरी, आईन अलेखे अपार।
अस्सां सिकण रहे के गालजी, सभ तूंही करणहार।।५।।

यह तो मैंने तिल जितनी कही है। हमारी इच्छाएं बेशुमार हैं। हमारी किसी बात की इच्छा बाकी कैसे रह जाए, जब सब कुछ आप करने वाले हैं?

Nijanand App